# ( कविता )
# मेरी पहचान

मैं औरत हूँ,
मैं हर दिन खुद से लड़ती हूँ।
कभी डर से
कभी हालात से।

मेरे सपने छोटे नही हैं,
बस उन्हें पूरा करने का वक्त
मुझे देर से मिलता हैं।
लोग कहते है-
चुप रहो।

पर मेरी खामोशियों में भी हिम्मत बोलती है।
मैं गिरती हूँ, रोती हूँ,
फिर अपने आँसू खुद से पोछकर
खड़ी हो जाती हूँ।

मैं खास हूँ,
क्योंकि मैं हार मानना नही जानती।
मैं एक औरत हूँ,
मेरी कहानी आसान नही,
पर मेरी हिम्मत कभी कमजोर नही।

मैं हर दिन कुछ छोड़ती हूँ,
ताकि दुसरों का दिन बेहतर हो सके,
पर जब खुद के सपनों की बारी आती है,
तो उन्हें दिल में छुपा लेती हूँ।

मैं थकती हूँ,
पर रूकती नही

**कोमल कुमारी**
**अंग्रेजी विभाग**
**2024-28**
**241954**